पटना विश्वविद्यालय, पटना के दीक्षान्त समारोह–2016 में महाहिम राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री राम नाथ कोविंद का सम्बोधन

(20 अगस्त, 2016)

इस दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री सी॰ विद्यासागर राव जी, बिहार के शिक्षा मंत्री श्री अशोक चौधरी जी, पटना विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो॰ वाई॰ सी॰ सिम्हाद्रि जी, पटना विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो॰ आर॰ के॰ वर्मा, इस विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के अध्यक्ष, विभिन्न विभागों के अध्यक्ष, विभिन्न महाविद्यालयों के प्राचार्यगण, विभिन्नसंस्थानोंके निदेशक, विश्वविद्यालय के पदाधिकारीगण, शिक्षकगण, कर्मचारीगण, मीडिया– प्रतिनिधिगण तथा समारोह में उपस्थित प्यारे विद्यार्थियों!

मुझे बताया गया है कि पटना विश्वविद्यालय भारतीय उपमहाद्वीप का सातवाँ सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय है। इसकी स्थापना 1917 ई॰ में हुई थी और उच्च शिक्षा के लिए उन दिनों इसका क्षेत्र–विस्तार बिहार, उड़ीसा और नेपाल तक था। इस विश्वविद्यालय का इतिहास आधुनिक बिहार के इतिहास से जुड़ा हुआ है। यह विश्वविद्यालय बिहार का एकमात्र ऐसा विश्वविद्यालय है, जिसका स्वरूप पूरी तरह आवासीय है। ज्ञान–विज्ञान, राजनीति, अर्थनीति, कला, साहित्य और संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में इस विश्वविद्यालय की अलग पहचान है ।

बिहार ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में अत्यंत गौरवशाली परम्परा से जुड़ा हुआ प्रदेश रहा है। यहाँ के नालन्दा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों ने पूरे संसार में शान्ति, अहिंसा, प्रेम और सौहार्द्र का पाठ पढ़ाया है। वैशाली गणराज्य, चन्द्रगुप्त, अशोक, गौतम बुद्ध, महावीर और गणितज्ञ आर्यभट्ट की पवित्र भूमि यह बिहार की ही धरती रही है। आज जब हम इस विश्वविद्यालय के 'दीक्षांत समारोह' में इसके अतीत का स्मरण कर रहे हैं तो हमें इसकी ऐतिहासिक समृद्धि के अनुरूप नये भविष्य के सृजन के लिए भी उन्मुख रहते हुए सदैव तत्पर रहना होगा ।

आज के पावन अवसर पर मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि इस विश्वविद्यालय को इसके कई विद्वान शिक्षकों ने राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर एक विशेष पहचान दिलाई है। भारतीय इतिहास परिषद् की 1973 ई॰ में जब स्थापना हुई, तब डॉ॰ राम शरण शर्मा इसके प्रथम अध्यक्ष बनाये गये थे। इसी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ॰ जॉर्ज जैकब 'विश्वविद्यालय अनुदान आयोग' के अध्यक्ष बनाये गये थे । इस विश्वविद्यालय के कई पूर्ववर्ती छात्र और शिक्षक अपनी राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति के लिए जाने जाते हैं । यहाँ के कई शिक्षकों को शिक्षा क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए 'पद्मश्री' की उपाधि मिल चुकी है । 'साहित्य अकादमी' का सम्मान भी इस विश्वविद्यालय के एक शिक्षक को मिला है । भारत में एकमात्र 'डालफिन मैन' के नाम

से पहचाने जाने वाले डॉ॰ आर॰ के॰ सिन्हा इसी विश्वविद्यालय के शिक्षक हैं, जिन्हें राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मश्री' से अलंकृत किया गया है। इसी तरह साहित्य एवं कला संस्कृति के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए कई शिक्षकों को 'राजभाषा सम्मान' मिल चुका है । पटना विश्वविद्यालय के कला एवं शिल्प महाविद्यालय के कलाकारों की अलग राष्ट्रीय पहचान रही है । 'ललित कला अकादमी' के परिसर में यहाँ के कलाकार द्वारा बनाया गया मूर्तिशिल्प अलग से रेखांकित करने योग्य है। यहीं के एक छात्र आजकल पूर्व क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र के निदेशक के पद पर विराजमान हैं ।

प्यारे विद्यार्थियों, आज के पावन अवसर पर मेरा अनुरोध है कि आप अपना सुविचारित लक्ष्य निर्धारित कर दृढ़संकल्पित हो जायें। कठिन परिश्रम, दृढ़ इच्छाशक्ति और अडिग संकल्प – इन सब का कोई दूसरा विकल्प नहीं है, अपने लक्ष्य को हासिल करने का। कोई भी लक्ष्य छोटा नहीं होता, सभी लक्ष्य अपनी सार्थकता द्वारा सदैव महत्वपूर्ण बने रहते हैं। इस संबंध में मैं आप सब के बीच एक प्रसंग साझा करना चाहता हूँ। आप सभी महान वैज्ञानिक आइंस्टीन, जिन्होंने जीमवतल वि त्मसंजपअपजल का प्रतिपादन किया, को जरूर जानते होंगे। उनके जीवन से जुड़ी एक घटना है। एक बार आइंस्टीन ट्रेन से अपने देश में यात्रा कर रहे थे। टिकट–निरीक्षक यात्रियों की टिकटें चेक कर

रहा था। उसने आइंस्टीन से टिकट दिखाने को कहा। आइंस्टीन ने अपनी जेबों को टटोला, इधर–उधर देखा, पर टिकट नहीं मिला। टिकट निरीक्षक बोला– ''महाशय ! मैंने आपको पहचान लिया है। आप अब कष्ट न करें, क्योंकि मैं जानता हूँ – आप हमारे देश के श्रेष्ठ वैज्ञानिक आइंस्टीन हैं। आप कभी रेल–सेवा के नियमों का उल्लंघन नहीं करेंगे।'' आइंस्टीन बोले – ''भाई ! तुम्हारा कथन सही है, किन्तु मुसीबत मेरे सामने दूसरी है। टिकट के बिना पता कैसे चलेगा कि मुझे किस स्टेशन पर उतरना है।'' यह घटना सुनकर हँसी आ सकती है कि इतने बड़े वैज्ञानिक को आखिर यह पता नहीं है कि उसे कहाँ जाना है। परंतु यहाँ गंभीरतापूर्वक प्रेरणा ग्रहण करने वाली बात यह है कि इतने बड़े विश्वविख्यात वैज्ञानिक को अपना लक्ष्य याद न रखने के कारण कितनी परेशानी हो सकती है। अतः हमें अपने लक्ष्य, चाहे छोटा हो या बड़ा हो, को सदैव याद रखना चाहिए।

प्रिय विद्यार्थियों, भारतीय संस्कृति और शिक्षा, नैतिक मूल्यों और सिद्धान्तों में विश्वास करती है। स्वामी विवेकानंद जी का कथन है कि ''जो शिक्षा साधारण व्यक्ति को जीवन–संग्राम में समर्थ नहीं बना सकती, जो मनुष्य में चरित्र–बल, पर–हित भावना तथा सिंह के समान साहस नहीं ला सकती, उसे क्या शिक्षा कहा जा सकता है? हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे

चरित्र–निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और देश के युवक अपने पैरों पर खड़े होना सीखें।''

हमारे राष्ट्रपति डॉ॰ प्रणव मुखर्जी जी ने हाल ही में संपन्न 'विजिटर्स अवार्ड वितरण समारोह' में विश्वविद्यालयों को समुन्नत और विकसित बनाने हेतु कुछ सुझाव दिए। उन्होंने कहा कि – ''एक शीर्ष उच्च शिक्षण संस्थान होने के लिए कुछ बुनियादी शर्त्तों का पालन करने की आवश्यकता है। सबसे महत्त्वपूर्ण है कि हम शिक्षा और अनुसंधान की गुणवत्ता सुनिश्चित करें, शिक्षण के स्तर को विकसित करें तथा अंतर्राष्ट्रीय और अन्य स्वदेशी संगठनों के साथ अपनी संस्थाओं के संबंध स्थापित करें। अकादमिक उत्कृष्टता के साथ–साथ, मूल मानवीय सभ्यता के प्रमुख मूल्यों, यथा–राष्ट्रभक्ति, करूणा, ईमानदारी, सहिष्णुता, कर्त्तव्य–परायणता और महिलाओं के प्रति सम्मान का भाव हमारी उच्च शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए।''

माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी जी के ये विचार, जो उन्होंने उच्च शिक्षण संस्थाओं के संदर्भ में व्यक्त किए हैं, दरअसल आज के दौर में देश और समाज की मौजूदा चुनौतियों के मद्देनजर काफी महत्वपूर्ण हैं।

सज्जनों, ये कुछ महत्वपूर्ण बाते थीं, जिन्हें मैंने आपके बीच इसलिए रखी, ताकि आप जब अपने विश्वविद्यालय को हर दृष्टि

से विकसित करने का प्रयास करें तो इन बातों पर भी जरूर ध्यान दें।

एक उक्ति है कि– ''सूरज को छू लेने के लिए आपको एक छलांग लगानी होगी। भले ही आप सूरज को नहीं छू सकें, लेकिन छलांग लगाते समय आप कुछ क्षण के लिए ही सही सतह से ऊपर तो जरूर उठ जाएँगे।'' हमारे प्रिय छात्रों, आज आप इस समारोह में उपाधि प्राप्त कर रहे हैं, हमें लगता है– आप सतह के ऊपर जरूर उठ रहे हैं।

कोई भी 'दीक्षांत समारोह' आपकी दीक्षा का अंतिम समारोह नहीं होता है। आज की उपाधि प्राप्त करने के बाद आपके सामने भविष्य की कठिन चुनौतियाँ होंगी। आप अधिक से अधिक सामाजिक सरोकारों से जुड़ पायेंगे।

आज वैश्वीकरण के दौर में ज्ञान– विज्ञान और तकनीक के नए क्षितिज खुल रहे हैं तथा आपके कार्यभार और दायित्व और अधिक बढ़ रहें हैं । साथ ही, कठिन स्पर्धा के दौर में आप शामिल भी हो रहें हैं। हम मानते हैं कि हमारे विश्वविद्यालयों की आंतरिक और आधारभूत संरचना समुचित रूप में विकसित नहीं हो पायी है, किन्तु संसाधनों की कमी के बावजूद, हमारी इच्छा–शक्ति में जरा भी कमी नहीं है। कतिपय अभावों के बावजूद हम नई पीढ़ी को निरन्तर तराश रहे हैं। आज जब आप अपनी उच्चतम

डिग्रियाँ लेकर घर जायेंगे, तो ये डिग्रियाँ आपके भविष्य के सुनहरे सपनों के लिए प्रमुख दस्तावेज बनेंगी।

आप में से जिनको पीएच॰–डी॰ की डिग्री प्राप्त हुई है, उन्हें जीवन के नए अनुभवों पर और भी शोध करने होंगे तथा देश और समाज को और भी बेहतर बनाना होगा। आप में से जिन्हें 'गोल्ड मेडल्स' मिल रहें हैं, उन्हें और भी नई भूमिकाओं का निर्वहन करना होगा तथा समाज को नई दिशा देने के लिए नेतृत्वकारी भूमिका निभानी होगी।

आज 'दीक्षांत समारोह' के सुअवसर पर मैं डिग्री–प्राप्तकर्ता सभी विद्यार्थियों सहित समस्त पटना विश्वविद्यालय– परिवार को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ। ऐसे भव्य समारोह के सफल आयोजन के लिए कुलपति और उनकी पूरी टीम को साधुवाद देता हूँ । आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद ।

जय हिन्द !

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।